अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : चतुर्थ- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 04 जनवरी, 2026)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) ईर्या समिति के कारण हैं-
(क) 2 (ख) 3
(ग) 4 (घ) 6 (ग)

(ii) भिक्षा लेने की सम्यक् प्रवृत्ति को कहते हैं-
(क) ईर्या समिति (ख) भाषा समिति
(ग) एषणा समिति (घ) आदान भाण्डमात्र निक्षेपणा समिति (ग)

(iii) 'मक्खिय' दोष लगता है-
(क) साधु को (ख) गृहस्थ को
(ग) साधु और गृहस्थ को (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(iv) काया की अशुभ प्रवृत्तियों को रोकना कहलाता है-
(क) मन गुप्ति (ख) वचन गुप्ति
(ग) काय गुप्ति (घ) भाव गुप्ति (ग)

(v) वैद्य की तरह चिकित्सा करके आहारादि लेवे तो कौनसा दोष होता है-
(क) वणीमगे (ख) तिगिच्छे
(ग) आजीव (घ) दुई (ख)

(vi) पहली नारकी में कितने ज्ञान की नियमा होती है-
(क) 5 ज्ञान (ख) 3 ज्ञान
(ग) 2 ज्ञान (घ) 4 ज्ञान (ख)

(vii) ज्ञान लब्धि का थोकड़ा भगवती सूत्र के कौनसे उद्देशक में चलता है-
(क) 8 (ख) 2
(ग) 5 (घ) 1 (ख)

(viii) लब्धि के भेद होते हैं-
(क)10 (ख) 8
(ग) 7 (घ) 5 (क)

(ix) अलेशी में कौनसे ज्ञान की नियमा होती है-
(क) मतिज्ञान (ख) श्रुतज्ञान
(ग) केवलज्ञान (घ) अवधिज्ञान (ग)

(x) नारकी अपर्याप्त में गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) 5 (ख) 10
(ग) 12 (घ) 2 (घ)

(xi) तिर्यंच में उपयोग पाये जाते हैं-
(क) 5 (ख) 11
(ग) 9 (घ) 6 (ग)

(xii) सन्नी मनुष्य को अपर्याप्त अवस्था में कौनसा ज्ञान नहीं होता-
(क) मतिज्ञान (ख) अवधिज्ञान
(ग) विभंगज्ञान (घ) श्रुतज्ञान (ग)

(xiii) अणगार कितने गुणों को धारण करते हैं-
(क) 25 (ख) 27
(ग) 12 (घ) 36 (ख)

(xiv) धर्मदेव की आगति कितनी है-

(क) 82 (ख) 275

(ग) 111 (घ) 38 (ख)

(xv) तीसरी नरक की आगति कितनी है-

(क) 3 (ख) 4

(ग) 5 (घ) 6 (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) मार्ग से कुपथ को छोड़कर सुपथ पर चले। (हाँ)

(ii) दूसरों को हानि पहुँचाने का विचार करना 'संरंभ' कहलाता है। (हाँ)

(iii) धर्म का चिन्तन-मनन करने के लिए साधु आहार छोड़ते हैं। (नहीं)

(iv) उपधि के दो भेद होते हैं। (हाँ)

(v) 'दायग दोष' केवल साधु को ही लगता है। (नहीं)

(vi) ज्ञान लब्धि का ग्यारहवाँ द्वार योग है। (नहीं)

(vii) नो सूक्ष्म-नो बादर में केवलज्ञान की नियमा होती है। (हाँ)

(viii) ज्ञान की स्थिति को 'काल' कहते हैं। (हाँ)

(ix) अनाहारक में 4 ज्ञान एवं 3 अज्ञान की भजना होती है। (हाँ)

(x) समुच्चय पर्याप्त आहारक में जीव के 7 भेद होते हैं। (हाँ)

(xi) तिर्यंच में प्रथम 5 गुणस्थान पाये जाते हैं। (हाँ)

(xii) देवियों में 6 लेश्या होती हैं। (नहीं)

(xiii) देवाधिदेव 34 अतिशय से युक्त होते हैं। (हाँ)

(xiv) नरदेव की आगति 82 की होती है। (हाँ)

(xv) छोटी गतागत के जीव के 563 भेद बताये गए हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(i)	हास्य	(क) मन गुप्ति	वचन दोष
(ii)	मन की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना	(ख) 14	मन गुप्ति
(iii)	अठारहवाँ द्वार	(ग) 4 ज्ञान	काल
(iv)	नपुंसकवेदी में ज्ञान	(घ) 5 ज्ञान	4 ज्ञान
(v)	शुक्ल लेशी में ज्ञान	(च) काल	5 ज्ञान
(vi)	मनुष्य में गुणस्थान	(छ) 110	14
(vii)	देव में गुणस्थान	(ज) 35	04
(viii)	वाणी के गुण	(झ) 04	35
(ix)	देव के प्रकार	(य) वचन दोष	05
(x)	संसारी जीवों के कुल भेद	(र) 05	110

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) वध करने या जीवन रहित करने की क्रिया को मेरे नाम से जाना जाता है। आरम्भ

(ii) मेरा पालन करने से गृहस्थी का जीवन सुख-शान्तिमय बन सकता है। पाँच समिति-तीन गुप्ति

(iii) मैं एक ऐसा दोष हूँ जो बिना शस्त्र परिणत लेने पर लगता हूँ। अपरिणय दोष

(iv) मैं ज्ञान लब्धि के थोकड़े का 21वाँ द्वार हूँ। पर्याय की अल्पबहुत्व

(v) मैं लब्धि का सातवाँ भेद हूँ। भोग लब्धि

(vi) मैं केवल ज्ञान का प्रथम भेद हूँ। भवस्थ केवलज्ञान
(vii) मैं अवधिज्ञान का प्रथम भेद हूँ। अनुगामी
(viii) मैं ऐसा गुणस्थान हूँ, जिसमें कोई भी लेश्या नहीं पाई जाती है। चौदहवाँ गुणस्थान
(ix) नारकी का ऐसा भेद हूँ, जिसमें सास्वादन समकित नहीं पाई जाती है। नारकी के अपर्याप्त में
(x) मैं देव का भेद हूँ, जिसमें जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट तीन पल्योपम की है। भव्य द्रव्य देव
(xi) मैं एक ऐसा आगम हूँ, जिसमें पाँच देवों के थोकड़े का अधिकार चलता है। भगवती सूत्र
(xii) हम ऐसे देव हैं जो उसी भव में नियमा मोक्ष में जाते हैं। देवाधिदेव
(xiii) हम ऐसे देव हैं जिनकी आगति 275 की होती है। धर्मदेव
(xiv) मेरा वर्णन श्री पन्नवणा सूत्र के छठे पद में किया है। छोटी गतागत
(xv) मैं नारकी का एक भेद हूँ जिसकी आगति एवं गति 6 की होती है। दूसरी नरक

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2 = (18)

(i) वचन गुप्ति किसे कहते हैं ? इसके भेदों के नाम भी लिखिए।
उ. वचन की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना वचन गुप्ति है। इसके चार भेद- 1. सत्या, 2. मृषा, 3. सत्यामृषा, 4. असत्यामृषा।
(ii) ईर्या समिति के चार कारणों के नाम लिखकर प्रथम कारण के भेद लिखिए।
उ. ईर्या समिति के चार कारण हैं- 1. आलम्बन, 2. काल, 3. मार्ग, 4. यतना।
आलम्बन के तीन भेद- 1. ज्ञान, 2. दर्शन, 3. चारित्र।
(iii) 'विज्जा दोष' का अर्थ लिखिए।
उ. जिसकी अधिष्ठात्री देवी हो अथवा जो साधना से सिद्ध की गई हो, उसे विद्या के प्रयोग से आहार आदि लेवे तो विज्जा दोष है।
(iv) सकायिक जीवों में ज्ञान एवं अज्ञान की भजना लिखिए।
उ. सकायिक जीवों में 5 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना।
(v) समुच्चय ज्ञानी में पाये जाने वाले भंग लिखिए।
उ. समुच्चय ज्ञानी में भंग पावे को दो- 1. साइया अपज्जवसिया, 2. साइया सपज्जवसिया।
(vi) भावदेव किसे कहते हैं ?
उ. जिन जीवों के देवगति नाम कर्म एवं देवायु का उदय हो, वे भावदेव कहलाते हैं।
(vii) धर्मदेव की जघन्य एवं उत्कृष्ट अवगाहना कितनी होती है ?
उ. धर्मदेव की अवगाहना जघन्य दो हाथ की उत्कृष्ट 500 धनुष की होती है।
(viii) अपर्याप्त किन्तु आहारक मनुष्य एवं तिर्यंचों में कौन-कौन से योग पाये जाते हैं ?
उ. मनुष्य-तिर्यंच में औदारिक, औदारिक मिश्र काय योग मिलता है।
(ix) कौनसी नरकों से निकले जीव तीर्थंकर हो सकते हैं ?
उ. पहली, दूसरी एवं तीसरी नारकी से निकले हुए जीव तीर्थंकर हो सकते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3 = (27)

(i) साधु के आहार छोड़ने के 6 कारण लिखिए।
उ. 1. शूलादि रोग उत्पन्न होने पर, 2. देवता, मनुष्य, तिर्यंच संबंधी उपसर्ग उत्पन्न होने पर, 3. ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए, 4. प्राणियों की रक्षा के लिए, 5. तपस्या करने के लिए एवं 6. शरीर का त्याग करने के लिए।

(ii) उपधि के भेदों को उदाहरण सहित समझाइए।

उ. उपधि के दो भेद- 1. औघिक, 2. औपग्रहिक।

1. औघिक- सामान्य उपधि जो हमेशा पास रखी जाये, जैसे- रजोहरण, वस्त्र, पात्र आदि गृहस्थ से लेवें एवं भोगे।

2. औपग्रहिक- प्रातिहारिक उपधि जो गृहस्थ से कारण से लेवें, भोगे एवं कार्य के बाद लौटावें, जैसे-पाट, चौकी आदि।

(iii) उत्पादना के 16 दोषों में से दूई एवं पुव्विपच्छासंथवं दोष को समझाइए।

उ. दूई- इति की तरह संदेश पहुँचा कर आहारादि लेवे तो दूति दोष।

निमित्ते- निमित्त ज्ञान से भूत-भविष्य-वर्तमान काल के लाभ, अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरणादि बताकर आहारादि लेवे तो निमित्त दोष।

पुव्विपच्छासंथवं- पहले या पीछे दाता की प्रशंसा करके आहारादि लेवे तो पूर्व पश्चात् संस्तव दोष।

(iv) ज्ञान लब्धि के उपयोग द्वार को समझाइए।

उ. साकारोपयोग अनाकारोपयोग में 5 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना।

चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन में 4 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना।

अवधिदर्शन में चार ज्ञान की भजना, 3 अज्ञान की नियमा।

केवलदर्शन में केवलज्ञान की नियमा।

(v) केवलज्ञान एवं विभंग ज्ञान के अलद्धिया में ज्ञान एवं अज्ञान की भजना लिखिए।

उ. केवलज्ञान के अलद्धिया में 4 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना।

विभंगज्ञान के अलद्धिया में 5 ज्ञान की भजना, 2 अज्ञान की नियमा।

(vi) तिर्यंच अपर्याप्त में गुणस्थान, योग, उपयोग एवं लेश्या बताइए।

उ. तिर्यंच अपर्याप्त में गुणस्थान 3, योग 3, उपयोग 6, एवं लेश्या 6 होती है।

(vii) नरदेवों से देवाधिदेव संख्यात गुणा अधिक क्यों हैं ?

उ. नरदेवों से देवाधिदेव संख्यात गुणा है, क्योंकि भरत-ऐरवत क्षेत्रों में चक्रवर्तियों से दुगुने अर्थात् 24-24 होते हैं और महाविदेह क्षेत्रों के विजयों में वासुदेवों की मौजूदगी में भी वे उत्पन्न होते हैं।

(viii) साधु जी के 27 गुण लिखिए।

उ. साधुजी के 27 गुण- 5 महाव्रत पालें, 5 इन्द्रियाँ जीते, 4 कषाय टालें, भाव सच्चे, करण सच्चे, जोग सच्चे, क्षमावन्त, वैराग्यवन्त, ज्ञान सम्पन्न, दर्शन सम्पन्न, चारित्र सम्पन्न, मन समाधारणया, वचन समाधारणया, काय समाधारणया, शीतादि परीषहों को सहन करने वाले, मारणान्तिक उपसर्ग सहन करने वाले।

(ix) पाँच अनुत्तर विमान की आगति एवं गति को स्पष्ट कीजिए।

उ. पाँच अनुत्तर विमान में आगति 2 की- 1 ऋद्धि प्राप्त अप्रमादी अनगार और 2 अऋद्धि प्राप्त अप्रमादी अनगार। गति- 1 संख्यात वर्ष के कर्मभूमिज मनुष्य के पर्याप्त की।